IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, July 2022

महाकवि पुष्पदंत और उनका दार्शनिक दृष्टिकोण

डॉ० लालजीत राम
असिस्टेंट प्रोफेसर -हिन्दी
पं० रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

शोध सारांश:- महाकवि पुष्पदंत केवल कवि नहीं, जैन दर्शन के गहरे व्याख्याता भी थे। उनका दर्शन उनके काव्य में रस बनकर घुला हुआ है। पुष्पदंत का दर्शन एकांगी नहीं है। वे जैन धर्म के 'अनेकांत' को जीवन में उतारते हैं – सत्य के कई पहलू हो सकते हैं। 'महापुराण' के पात्रों के चरित्र में वे अच्छाई-बुराई का सपाट विभाजन नहीं करते। हर व्यक्ति में देवत्व और मानवीय कमजोरी साथ चलती है। इसलिए वे 'स्याद्वाद' की भाषा में कहते हैं – 'हो सकता है'। यह दृष्टि हठधर्मिता के विरुद्ध है। पुष्पदंत के लिए अहिंसा केवल जीव-हत्या न करना नहीं, बल्कि मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देना है। 'जसहरचरिउ' में वे दिखाते हैं कि हिंसा का फल जन्म-जन्मांतर तक पीछा करता है। उनकी करुणा राजा से लेकर चांडाल तक सबके लिए समान है।

यह सामाजिक समता का दर्शन है। पुष्पदंत भाग्यवादी नहीं हैं। वे जैन कर्म-सिद्धांत को मानते हैं – जैसा करोगे वैसा भरोगे। पर साथ ही वे पुरुषार्थ पर जोर देते हैं। पुष्पदंत का दर्शन जैन धर्म की कठोरता को काव्य की कोमलता में ढाल देता है। वे मोक्ष को लक्ष्य मानते हैं, पर संसार से भागने को नहीं कहते। उनका मार्ग है – संसार में रहकर निस्संग रहो। लोक में रहो, पर लोकोत्तर बनो। यही उनका दार्शनिक संतुलन है जो आज भी प्रासंगिक है।

मूल शब्द- सत्कार, भवदै, सृष्टिकर्ता, अनादि, विन्हू, विणुहनु, वदिज्जै,नहन्तु, नहतिरं।